सरस्वती नदी का ऐतिहासिक अध्ययन

7

मदन मोहन जोशी*

यमुना नदी के पूर्व और सतलज नदी के पश्चिम दिशा में सरस्वती नदी का उल्लेख ऋग्वेद (10.75)एवं अन्य वेदों के अलावा उत्तर वैदिक ग्रंथों में अनेक बार आया है। ऋग्वेद में कहा गया है;– 'अंबितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती'(2.41.16) अर्थात आप ही श्रेष्ठ माता,श्रेष्ठ नदी और श्रेष्ठ देवी हैं, ऋग्वैदिक लोग द्वितीय सहस्राब्दी ईसा पूर्व में सरस्वती नदी के मैदानों में ही निवास करते थे। हिन्दू–संस्कृति में प्रत्येक कर्मकाण्ड के पूर्व संकल्प लेने का विधान है जिसमें अन्य नदियों के साथ ही सरस्वती नदी का भी उच्चारण किया जाता है।वस्तुतः विद्या की देवी सरस्वती, इसी नदी का मानवीकरण है।

हिन्दू संस्कृति को मानने वालों के लिए सरस्वती नदी का अत्यंत महात्म्य है। आरंभिक आर्य संस्कृति, ब्रह्मावर्त में फली–फूली थी, यहीं पर लौकिक संस्कृत का विकास हुआ और अनेक वैदिक ग्रंथों का प्रणयन भी हुआ।ऋग्वेद के काल में प्रारंभिक आर्य संस्कृति का निवास स्थान (आर्यावर्त या ब्रह्मावर्त)पंजाब में और सरस्वती तथा दृशद्वती नदियों की घाटियों में था (Bridget and Raymond Allchin, 1982:358)।

समय के साथ यह नदी राजस्थान के मरूस्थल में विलुप्त हो गयी। भारतीय दूर संवेदी उपग्रह के द्वारा उत्तर भारत में सरस्वती नदी के निरूपण का कार्य किया गया और प्राप्त तथ्यों का ऐतिहासिक मानचित्रों,पुरातात्विक स्थलों इत्यादि से मिलान कर यह निष्कर्ष निकाला गया कि हड़प्पा सभ्यता के कालीबंगन, बनवाली,राखीगढ़ी,धौलावीरा एवं लोथल, सरस्वती नदी के तट पर ही स्थित थे।19वीं और 20वीं सदी के अनेक विद्वानों ने वैदिक नदी सरस्वती का साम्य उत्तर–पश्चिम भारत और पाकिस्तान में बहने वाली घग्गर–हाकरा नदी के साथ बैठाया है।

वैदिक ग्रंथों में सरस्वती को नदी देवी के रूप में प्रस्तुत किया गया है हांलाकि हिंदू धर्म के बाद के ग्रंथों विशेषकर पुराणों में उसे नदी के साथ समीकृत नहीं किया गया है वरन् यहां वह ज्ञान, विद्या, बुद्धि, संगीत तथा कला की देवी के रूप में वर्णित मिलती है।प्रतीत होता है कि सरस्वती का विकास नदी की देवी से ज्ञान की देवी के रूप में बाद के ब्राह्मण काल में प्रारंभ हुआ, जहां उसे वाग्देवी से

* *सहायक प्राध्यापक, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी*

समीकृत किया गया, क्योंकि वैदिक धर्म में वाक–शक्ति का केन्द्रीय स्थान था और यह धर्म इसी नदी के किनारे विकसित हुआ था।

सरस्वती नदी की निचली धारा के विलोपन का प्रथम उल्लेख ब्राह्मण ग्रंथों (जैमिनीय:2.297)में मिलता है, जहां सरस्वती के उपमज्जन का उल्लेख है, पंचविंश ब्राह्मण भी उसके विनाशन या विलुप्त होने का वर्णन करता है और कहता है कि सरस्वती नदी (कुब्जिमति) विसर्पण कर रही है और उसमें दिव्यता को धारण करने की शक्ति नहीं रह गयी है जिस दिव्यता को उसने आधार दिया था (पंचविंश ब्राह्मण 25.10.11–16) ।महाभारत के अनुसार सरस्वती नदी मरूभूमि में विनाशन या अदर्शन नामक स्थान पर सूख गयी थी(महाभारत : 3.82.111;3.130.3; 6.7.47)और मरूभूमि में विलोपन के पश्चात विभिन्न स्थानों में पुनः प्रकट हुई (महाभारत:3.80. 118) और शीघ्र ही समुद्र में समाहित हो गयी(महाभारत : 3.88.2)। विभिन्न पुराणों में भी वर्णन है कि सरस्वती नदी अनेक झीलों में परिवर्तित हो गयी थी (D.S. Chauhan 1999:35-44),महाभारत में जो वर्णन (महाभारत:3.81.115) आता है वह दृशद्वती नदी के उत्तर और सरस्वती के दक्षिण स्थित कुरू प्रदेश है और वर्तमान राजस्थान और हरियाणा की सूखी हुई मौसमी नदी घग्गर की भौगोलिक स्थिति से इसका साम्य बैठाया जा सकता है।

पौराणिक सरस्वती नदी के तादात्मीकरण के अनेक प्रयास किये गये हैं, कुछ विद्वानों का मानना है कि सरस्वती नदी कभी सिंधु नदी के पूर्व में बहती थी। अनेकों वैज्ञानिकों, भूगर्भशास्त्रियों तथा अन्य विद्वानों ने सरस्वती नदी को विभिन्न लुप्त और विद्यमान नदियों से तादात्मीकरण का प्रयास किया है। वर्तमान में इस संदर्भ में दो विचारधाराऐं प्रचलित हैं। प्रथम के अनुसार पश्चिमोत्तर भारत और पाकिस्तान में विद्यमान घग्गर–हाकरा नदी और उसके सूखे हुए हिस्से ही प्राचीन सरस्वती नदी है, (Pushpendra K. Agarwal et al: 2007; Upinder Singh :2008;Charles Keith Maisels :2003)जबकि दूसरी विचारधारा के अनुसार अफगा़निस्तान की हेलमन्द घाटी में स्थित हेलमन्द नदी या कोई प्राचीन नदी ही सरस्वती नदी है।

जिन विद्वानों ने घग्गर–हाकरा नदी और उसके सूखे हुए हिस्से को प्राचीन सरस्वती नदी माना है उनका इस संबंध में प्रमुख तर्क यह है कि सरस्वती नदी की स्थिति की जो परिकल्पना सिन्धु नदी के पूर्व में की गयी है वह घग्गर–हाकरा के नदी तल से साम्य रखती है; इसके अलावा सिन्धु नदी के पूर्व में किसी विशाल नदी की वास्तविक अनुपस्थिति, ऐतिहासिक घग्गर–हाकरा नदी के सूखने से की जा सकती है साथ ही पौराणिक सरस्वती के विलोपन और वर्तमान घग्गर–हाकरा नदी

के मरूभूमि में समाप्ति की व्याख्या भी होती है। मार्क ऑरेल स्टीन तथा मैक्स मूलर जैसे विद्वानों ने भी घग्गर–हाकरा नदी को ही सरस्वती नदी माना है। लेकिन रोमिला थापर इस विचार से मतभेद रखती हैं और कहती हैं कि सरस्वती नदी का वर्णन ऊंचे पहाड़ों के मध्य बहती नदी के रूप में मिलता है, जबकि घग्गर का जलमार्ग ऐसा नहीं है, वह अफगानिस्तान की हेरक्सवैती (हेलमंद) को सरस्वती नदी मानती हैं।

दूसरी विचारधारा से संबंधित विद्वान सरस्वती नदी का तादात्मीकरण अफगानिस्तान की हेलमंद नदी से करते हैं। हेलमंद नदी के विषय में अवेस्ता में उसी प्रकार गुणगान मिलता है जैसा कि सरस्वती के लिए वैदिक ग्रंथों में किया गया है।एक विचार के अनुसार हेलमंद नदी, आरंभिक ऋग्वेदिक नदी सरस्वती से समानता रखती है (Kochhar:1999), इस समानता का आधार ऋग्वेद के सूक्त (2.41;7.36) बतलाये गये हैं। हेलमंद नदी का आरंभिक ऋग्वेदिक नदी सरस्वती से तदात्मीकरण इतना आसान प्रतीत नहीं होता, हांलाकि हेलमंद नदी और सरस्वती की भौगोलिक स्थिति में समानता दिखती है,दोनों ही नदियां अंतिम रूप से झील में समाहित हो जाती हैं, हेलमंद नदी, हमू–ए–हेलमंद और सरस्वती, समुद्र (तत्कालीन झील) में। लेकिन ऋग्वेद(10.75.5)के अनुसार सरस्वती की अवस्थिति यमुना और घग्गर के मध्य थी और हमें अफगानिस्तान में यमुना और घग्गर के नाम की कोई नदियां नहीं मिलती हैं।

एक अन्य विचारधारा के अनुसार,सरस्वती पृथ्वी की नदी न होकर,स्वर्ग की एक नदी थी।बात जो भी हो सरस्वती नदी को खोजने का प्रयास निरंतर जारी है और वर्तमान में किसी एक नदी को पूरे विश्वास के साथ सरस्वती से तादात्मीकरण करना वर्तमान साक्ष्यों के प्रकाश में संभव नहीं है।

संदर्भ

1.ऋग्वेद : श्री गीताप्रेस गोरखपुर

2. Bridget Allchin, Raymond Allchin, The Rise of Civilization in India and Pakistan, Cambridge University Press, 1982, P.358.

3. Eck, Diana L. (2012), India: A Sacred Geography, Clarkson Potter/Ten Speed/ Harmony

4. D.S. Chauhan in Radhakrishna, B.P. and Merh, S.S. (editors): Vedic Saraswati, 1999, p.35-44

5. Pushpendra K. Agarwal; Vijay P. Singh: 2007. Hydrology and Water Resources of India. Springer Science & Business Media. pp. 311–2

6. Upinder Singh (2008). A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century. Pearson Education India. pp. 137–8.

7. Charles Keith Maisels (16 December 2003). "The Indus/'Harappan'/ Sarasvati Civilization". Early Civilizations of the Old World: The Formative Histories of Egypt, The Levant, Mesopotamia, India and China. Routledge. p. 184.

8. Kochhar, Rajesh(1999): 'On the identity and chronology of the Zgvedic river Sarasvatī' in Archaeology and Language III; Artefacts, languages and texts, Routledge